**AMOGHVARTA**

**ISSN : 2583-3189**

# श्रीलंका में प्रचलित आर्य सिंहली या सिंहली भाषा और भारतीय आर्य भाषा का संबंध

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**ब्रसिल नागॉड वितान**
पीएचडी शोधार्थी, श्रीलंका
भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

## शोध सार

*मानव भाषा का इतिहास पुराना है। इस पुराने इतिहास में दुनिया की अनेक भाषाओं के उद्भव और विकास की जड़ें छिपी हुई हैं। भाषा के इतिहास के साथ जुड़ी, केवल श्रीलंका के लिए ही सीमित भाषा 'सिंहली और हिंदी भाषा का पारिवारिक और बुनियादी स्रोतों के प्रति सुधिजनों का ध्यान अवगत करना प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है। श्रीलंकाई प्रवासी दुनियाभर सिंहली भाषा में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। मौलिक, मातृभाषा के रूप मे सिंहली भाषा बोलने वाली समुदाय केवल श्री लंका में ही पायी जाती है। सिंहली भाषा ने भारतीय आर्य भाषा के प्रभाव एवं आश्रय से विकास होकर बाद में अपना स्वतंत्र रूप धारण कर लिया है। प्रस्तुत शोधकार्य के लिए द्वितीय आँकड़ों का प्रयोग किया गया क्योंकि ऐतिहासिक तथ्यों का अधिकाश विवरण पुस्तकों, शोधपत्रों, शिलालेखों तथा पांडुलिपियों में मिलते हैं। लिखित सामग्रियों के सूक्ष्म अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि सिंहली भाषा का विकास उत्तर प्रदेश से संबंधित किसी प्राकृत भाषा से हुआ था जिसका संबंध आर्य भाषा परंपरा से है। यह भी समर्थन हुआ कि 'सिंह' वंश से कुमार विजय की परंपरा विकास हुई है, अतः भाषा का नाम 'सिंहली' पड़ा।*

## मुख्य शब्द

*आर्य भाषा, सिंहली भाषा, विभिन्न मत, उद्भव और विकास.*

श्रीलंका वर्ग किलोमीटर 65610 भूखंड में भारत के दक्षिण सीमा में बसा एक सुंदर भू भाग है। श्रीलंका में प्रमुख तीन भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें से सिंहली और तमिल राष्ट्र भाषाएँ हैं और अंग्रेज़ी राजभाषा है। मेरे संज्ञान में सिंहली भाषा का अनुभव भारतीय जनता को मात्र नगण्य है, लेकिन तमिल दक्षिण भारत की एक भाषा होने के नाते तमिल से परिचित है। श्रीलंका और भारत के बीच में भाषा से संबंधित बहुत पुराना इतिहास है। यदि प्राचीन श्रीलंका की भाषाओं के उत्पत्ति और विकास पर दृष्टिपात किया जाता है तो बोध होता है कि श्रीलंका की दोनों प्रमुख भाषाएँ तमिल और सिंहली के साथ हिंदी भाषा का निकट संबंध है। श्रीलंका के हिंदी अध्येता अन्य विदेशी भाषाओं की तुलना में हिंदी पढ़ने के लिए अधिक रुचि रखते हैं और भाषा ग्रहण करने में भी अन्य विदेशी भाषाओं की तुलना में सक्षम और तेज़ होते हैं।

जिस प्रकार हिंदी भाषा का आविर्भाव आर्य भाषा से हुआ था, उसी प्रकार श्रीलंका का इतिहास पुष्टि करता है कि सिंहली भाषा का आविर्भाव भी संस्कृत से संबंधित आर्य भाषा से हुआ है। सिंहली भाषा को 'आर्य सिंहल' नाम

से भी जाना जाता है इसलिए यह 'आर्य' शब्द का संबंध सिंहली के साथ जुड़ा हुआ है। सिंहली के साथ 'आर्य' शब्द का संबंध कहाँ से है और कैसा, कब हुआ है? आर्य नाम से कौन–सा जनवर्ग जाना जाता है? वे कहाँ से आये हैं? जिसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलते और मत भी विवादसप्रद हैं। इतिहास ग्रंथों में उल्लिखित है कि कुछ विद्वनों का विचार है, आर्य वे हैं जो खेती करते थे। कुछ लोगों के मत हैं, आर्य वे हैं जो भारत का आक्रमण करके भारत पहुँचे हैं।

हिंदी भाषा के इतिहास ग्रंथों में भी यह विवादास्पद मुद्दा है कि हिंदी भाषा की उत्पत्ति कब और कहाँ हुई है? भारतीय इतिहास में उल्लिखित है कि भारत में आर्यों का आगमन ईस्वी पूर्व 2000–2500 के आसपास भारत के उत्तर–पश्चिमी सीमा से हुआ होगा।[1] जो लोग भारत का आक्रमण करके पहुँचे वे स्वदेशी लोगों को भागकर मध्य देश, काशी, कौशल, मगध, विदेह, अंग–बंग और कामरूप आदि क्षेत्रों तक व्याप्त हो गये थे और वहाँ के स्थानीय लोगों को भगाकर अपने राज्य की स्थापना की गयी थी। सिंहली इतिहास ग्रंथों में उल्लिखित है कि आर्यों ने भारत का आक्रमण किया था। विद्वान ए. एल. एम. बशाम का कहना था जिन लोगों ने भारत का आक्रमण किया था वे आर्य थे।[2]

उपर्युक्त वैषम्य विचारों से द्रष्टव्य है कि आर्यों के निवास्थान का कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता फिर भी नरेंद्र कृष्णसिंग और अनिलचंद्र बेनर्जी बताते थे कि भरोपीय या आर्य पश्चिम–पूर्व किरगीश स्टेप्स क्षेत्र में रहा करते थे और बाद में उनमें से कुछ यूरोप की तरफ और कुछ भारत–ईरान जैसी पूर्वी दिशा में चले गये थे। आज भी बहुत लोगों की मान्यता है कि भरोपीयों का निवास किरगीश में हुआ था और विश्वकोश भी गवाह देता है कि 3500 वर्षों पहले आर्य लोग वहाँ निवास करते थे।[3]

इतिहाज्ञ गोड़न चइल्ड के मतानुसार अमेरिका, यूरोप और भारत में जिन भाषाओं का प्रयोग अधिकांश होता है वे सभी भारोपीय परिवार के साथ कोई न कोई संबंध रखती हैं और उन सभी का विकास एक ही मातृभाषा से ही हुआ माना जाता है, इसलिए उन्ही के अनुसार जो लोग भारोपीय परिवार की भाषाओं का प्रयोग करते थे, वे आर्य माने जाते थे।[4] इनके मत के आधार पर स्पष्ट होता है कि 'आर्य' नाम से उन्हीं को जाना जाता है जिनसे भारोपीय परिवार के अंतर्गत किसी साधारण भाषा का प्रयोग किया गया था। इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि आर्य नाम कहाँ से प्रयोग में आया और आर्य नाम किसके वास्ते व्यवहृत किया गया था? क्योंकि सिंहली भाषा को भी 'आर्य सिंहल' कहा जाता है। सौभाग्यवश भारतीय आर्य भाषा के प्राचीन काल से आधुनिक काल तक की भाषा के विच्छिन्न रूप से उपलब्ध भाषा, साहित्य ग्रंथों में न्यूनाधिक रूप में पायी जाती है। साहित्य में सुरक्षित भाषा के तीन चरण माने जाते हैं जो निम्न प्रकार के हैं:

- प्राचीन इंदो आर्य भाषा।
- मध्य कालीन इंदो आर्य भाषा।
- आधुनिक इंदो आर्य भाषा।[5]

सिंहली इतिहास में विवरण मिलता है कि भारतीयों के किसी विकसित जन समुदाय से निर्वासित जनता से सिंहली जनवर्ग के विकास हुआ है। इसके प्रमाण श्रीलंका के इतिहास ग्रंथ दीपवंश[6], महावंश[7], शिलालेख तथा पालि पुरावृत्तों में संगृहित हैं। उनके अनुसार जो लोग सिंहली भाषा बोलते हैं उन्हें सिंहली भाषी माना जाता है। यही पुराण और इतिहास ग्रंथों में श्रीलंका में सिंहली जनता के जनवास के श्री गणेश का पूरा विवरण अंतर्गत है। उनके अनुसार विदित है कि महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के पहले भारत से कुमार विजय श्रीलंका पहुँचे थे। राजकुमार विजय के व्यवहार पर असन्तुष्ट उनके पिता ने विजय और उनके सात सौ मित्र, उनके बच्चे और महिलाएँ अलग अलग जहाजों में बिठाकर निर्वासित किये थे जो बाद में श्रीलंका पहुँचे थे। श्रीलंका के इतिहास ग्रंथों में विवरण मिलता था कि भारत से निर्वासित आर्यों से खंडित जनसमुदाय कुमार विजय और उनके मित्र पाँचवीं या छठी शताब्दी में श्रीलंका पहुँचे थे। उसके बाद उनके शादी–ब्याह के लिए भारत के मधुरा देश से कन्याएँ लायी गयीं जिनसे सिंहली परिवारों का विकास हो गया था। इन ग्रंथों में कहीं उल्लेख मिलता है कि ये लोग उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र से आये थे और कहीं उत्तर प्रदेश के पश्चिम–पूर्व से।[8]

कुमार विजय की परंपरा सिंह से उत्पन्न होने के कारण उनसे व्याप्त जनता को 'सिंहली' कहा गया है। इसी प्रकार श्रीलंका में सिंहली जनता का विकास हो गया और सिंहली जनता का संबंध भारतीय आर्यों से है। 'दीपवंश, [9] और विकिपीडिया में प्रस्तुत सारी कथाएँ उल्लिखित हैं कि राजा विजय से सिंहली समुदाय की उत्पत्ति और विकास हो गयी थी। दीपवंश और महावंश ग्रंथों की पालि भाषा की गाथाओं से इस संबंध में अनेक विवरण दिये गये थे।

सिंहली भाषा का विकास भी संस्कृत से विकसित किसी प्राकृत भाषा से हुआ माना जाता है। राजा विजय का आगमन उत्तर–पूर्व या उत्तर–पश्चिम में हुआ हो, वहाँ की भाषा कोई न कोई प्राकृत थी। भन्ते तेरिपेह सोमानंद जी के अनुसार राजा विजय और उनकी अवशेष जनता कोई न कोई प्राकृत से मिलती–जुलती भाषा में बात करते थे जो श्रीलंका के आदिम निवासी समझते थे। इससे ज्ञात होता है कि श्रीलंका के आदिम वासियों की भाषा प्राकृत से समान थी और सभी समुदाय किसी भी बाधा के बिना विचारों का आदान–प्रदान करते थे।[10] कुछ विद्वानों का मत है कि सिंहली भाषा के उद्‌भव और विकास पर पालि और संस्कृत भाषाओं का प्रभाव था। पूज्य भन्ते सोमानंद जी का कहना था कि परिवर्ती काल में सिंहली भाषा का विकास संस्कृत और पालि भाषाओं के प्रभाव से हुआ है।

श्रीलंका के विद्वान डॉ.पी.डी. गुणे के अनुसार वैदिक संस्कृत के अंतर्गत अनेवाली भाषाएँ आर्य भाषा कही जाती हैं। उनके भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार दुनिया की सभी भाषाएँ छब्बीस परिवारों में बाँटी जा सकती हैं और इंदो–आर्य उनमें से एक है। उनके विश्लेषण के अनुसार बोध होता है कि सिंहली और हिंदी भाषाएँ भी उसी में आती हैं।[11]

ई. पू. तीसरे में श्रीलंका में सिंहली भाषा का श्रीगणेश स्वीकार किया जाता है। सिंहली भाषा के उद्‌भव और विकास के अनुसंधान पर कार्यरत एस्. के चेटर्जी का कहना है कि सिंहली भाषा भी इंदो–आर्य भाषा की ही एक भाषा है। उसके समर्थनवश व्यक्त किया गया था कि सिंहली भाषा ने ईस्वी पूर्व 5वीं में अपनी अन्य भाषाओं से अलग होकर अपना अलग पहचान तब बना ली जब राजा विजय और उनके साथी श्रीलंका पहुँचे थे।

श्रीलंका के भाषाविद प्रो. डबलिव. एस्. करुणातिलके का मानना है कि पाकिस्तान की भाषा उर्दू, नेपाल की भाषा नेपाली, भारत की हिंदी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगाली, असमिया, सिंधी, कोंकणि तथा श्रीलंका में प्रचलित सिंहली तथा मोलडिवुस की भाषा भी इंदो–आर्य भाषा परिवार के साथ मिलती–जुलती हैं। उन्होंने भी समर्थन किया था कि सिंहली भाषा का आविर्भाव आर्य भाषा परिवार से हुआ है।[12]

सिंहली भाषा का उद्‌भव और विकास आर्य भाषा से होने का समर्थ करने वाले विद्वान बहुत हैं। भाषाविद् मोहम्मद सहईदुल्ला ने सिंहली भाषा के उद्‌भव और विकास पर विचार व्यकक्त करते हुए बताया था कि सिंहली भाषा का विकास मध्य भारतीय आर्य भाषा से ही हुआ था। इस कथन का समर्थन करते हुए भन्ते रंबुकवॅल्ले सिद्धार्थ जी ने 'भारतीय भाषा और सिंहली भाषा का संबंध'[Rev R Siddhartha,The Indian LanguagesAnd their relation with Sinhalies Language-Journal RAS (Ceylon) vol-xxxiii, No 88-1935] गोष्ठी में अपने वक्तव्य में विचार व्यक्त करते हुए बताया था कि सिंहली भाषा की विशेषताओं के अनुसार सिंहली भाषा का संबंध भारत की संस्कृत, पालि, अर्धमागधी, पंजाबी, गुजराती, हिंदी, बंगाली, उड़िया तथा असमिया आदि भाषाओं के साथ अधिक मिलती–जुलती है।

श्री लंका के इतिहास ग्रंथों के अनुसार यह मत भी प्रचलित हुआ कि कुमार विजय के लंका प्रवेश के बाद भारतीय जनता बार बार यहाँ आने लगी और वे लोग भारत के अलग–अलग क्षेत्रों से आये थे। इन लोगों की अलग–अलग भाषाएँ थीं जिसके कारण सिंहली भाषा का उलझीपन हुआ होगा, लेकिन विश्वास किया जाता है कि सिंधु क्षेत्र की आर्य भाषा की कोई प्राकृत भाषा सिंहली की मूल भाषा थी।[13] इसके अतिरिक्त जेमिस डी. अलविस (1863), मेंडिस गुणसेकर (1962) और विल्हेम गईगर (1932) आदि विद्वानों ने भी समर्थन किया था कि सिंहली भाषा का विकास आर्य भाषा परिवार से ही हुआ था। सिंहली और आर्य भाषा का संबंध लेकर तीन मत समाज के सामने आये थेः

- पहले पक्ष की धारणा थी उत्तर भारत के उत्तर–पूर्व में प्रचलित किसी इंदु आर्य प्राकृत से सिंहली भाषा का जन्म हुआ है।

- दूसरे पक्ष के विद्वानों का मानना है कि उत्तर भारत के पूर्वी क्षेत्र में प्रचलित प्राकृत से सिंहली भाषा का जन्म हुआ है।
- तीसरा पक्ष इन दोनों मतों के बीच का मत मानते थे और वे कहते थे कि सिंहली भाषा का जन्म न पूर्वी–उत्तर, न पश्चिम–उत्तर या न पश्चिमी से हुआ जो किसी विशेष इंदु–आर्य प्राकृत भाषा या उसी प्रकार के ही कई प्रकृतों के मिश्रण से सिंहली भाषा का जन्म हुआ होगा। सिंहली भाषा के विकास की यात्रा तीसरे ई. पू. से माना जाता है, जो निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता हैः

1. सिंहली प्राकृत काल 200 ई.पू. से 400 ई.।
2. प्राचीन सिंहली काल 400 ई से 800 ई.।
3. मध्य सिंहली काल 800 ई से 1300 ई.।
4. आधुनिक सिंहली काल 1300 ई से अबतक।[14]

सिंहली भाषा पर कार्यरत स्वर्गीय प्रो. विमल जी बलगल्ले जी ने अपनी पुस्तक 'सिंहल भाषावे संभवय हा परिणामय (सिंहली भाषा के उद्भव और विकास)' में सिंहली भाषा के विकास के विषय में लिखा है कि 'भारत के पश्चिम या पश्चिमोत्तर प्राकृत या प्राकृत के समान कई उप बोलियाँ बोलने वाले जन वर्ग से श्रीलंका की प्रथम जन समुदाय का श्री गणेश हुआ था। उसे परिवर्ती काल में उत्तर भारत के पूर्वी तथा मध्य क्षेत्रों से आए प्राकृत और उसकी उप बोलियाँ बोलने वाले मूल निवासियों से मिल गये और जन वर्ग का विकास आगे बढ़ रहा था। आर्यों के आगमन के साथ श्रीलंका के मूल यक्ष तथा नाग कबीलों की समुदाय भी क्रमशः आर्यों की भाषा बोलते–बोलते उनमें ही समा गये थे। अंत में प्राकृत के लक्षणों से विकृत भाषा का विकास हुआ जिसे 'सिंहली भाषा' कही गयी और जिन लोगों ने उसका प्रयोग किया उन्हें 'सिंहली जनता' कहने लगे।

सिहिलक >सीहल >हल >सिंहल[15]

## निष्कर्ष

निष्कर्षतः बताया जा सकता है कि सिंहली इतिहास ग्रंथ तथा भाषा का उद्भव और विकास का अध्ययन करने वाले विद्वानों के मतानुसार सिंहली भाषा की उत्पत्ति और विकास भारतीय आर्य भाषा परिवार से संबंधित किसी न किसी प्राकृत से हुआ है। भाषा और जनता दोनों का संबंध भारत से और आर्य परम्परा से होने के नाते हिन्दी–सिंहली समस्रोतीय भाषाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं के बीच की समानताओं और असमानताओं का स्वरूप दोनों भाषाओं के व्यतिरेकी विश्लेषण से बोध हो जाएगा।

## संदर्भ सूची

1. बलगल्ले, जी. विमल, *सिंहल भाषा अध्ययन हा विचारय* (सिंहली भाषा अध्ययन एवं आलोचना), एस.गॉडगे प्रकाशन, कोलम्बो 10।
2. बलगल्ले, जी. विमल, *सिंहल भाषावे संभवय हा परिणामय* (सिंहली भाषा का उद्भव और विकास), एस.गॉडगे प्रकाशन, कोलम्बो 10।
3. पूज्य पेरेरा जी तीयडोर (1992) *सिंहल भाषाव,* एस्. गॉडगे पब्लिकेशन, नॉरू 217, ओलकट मावत, कोलंबो 11।
4. भनते पेमानंद, पेनेलबॉड (2004) *सिंहल भाषावे परिनामे हा सिदत् संगरव* (सिंहली भाषा का विकास और सिदत् संगरव), एस. गॉडगे प्रकाशन, कोलंबो 10।
5. तिवारी, उदयनरायण (2007) *हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास,* लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिलडिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलहाबाद–1।

6. द्विवेदी कपिलदेव, (2019) *भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, पो. बॉ 1149, विशालाक्षी भवन, चौक वाराणसी 221001।
7. तिवारी भोलानाथ, (2008) *मानक हिन्दी का स्वरूप,* प्रभात प्रकाशन,4/19, आसफ आली रोड,नयी दिल्ली 2।

## पाद लेख

1. तिवारी, उदयनराण (2007) *हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास,* पृ. 23।
2. भनते पेमानंद, पनलबॉड (2004) *सिंहल भाषावे परिणामय हा सिदत संगराव,* पृ.01।
3. भनते पेमानंद,पनलबॉड (2004) *सिंहल भाषावे परिणामय हा सिदत संगराव,* पृ. 03।
4. वही, पृ. 02।
5. वही, पृ.08।
6. श्रीलंका के ऐतिहासिक तथ्यों के अन्तर्ग सर्वस्वीकृत इतिहास ग्रंथ माना जाता है।
7. वही।
8. बलगल्ल, जी. विमल (1992) *सिंहल भाषावे संभवय हा परिणामय,* पृ.02।
9. श्री लंका के ऐतिहासिक तथ्यों के अन्तर्ग सर्वस्वीकृत इतिहास ग्रंथ है जो 5 वीं शताब्दी में बौद्ध भिककुओं द्वारा अनुराधपुर महाविहार में लिखा गया माना जाता है।
10. भन्ते सोमानंद, तेरीपेह (1961) *सिंहलये परिनामय आदि युगय,* पृ.32।
11. भन्ते पेमानंद, पेनलबॉड (2004) *सिंहल भाषावे परिणामय हा सिदत संगराव,* पृ. 06।
12. करुणातीलक,डबलिउ. एस् (1984) *ऐतिहासिक वाग्विदया प्रवेशय,* प्रथम प्रकाशन, पृ, 168।
13. भन्ते पेमानंद,पेनलबॉड (2004) *सिंहल भाषावे परिणामय हा सिदत् संगराव,* पृ. 10।
14. अभयसिंह, ए,ए,राजपक्ष, आर,एम,डब्ल्यू (1992) *भाषा विज्ञान,* पृ. 27।
15. बलगल्ल, प्रो. जी.विमल(1992) सिंहल भाषावे संभवय हा परिणामय, पृ.10।

——==00==——